Result Mitra Daily Magazine

क्या असमानता विकासपरक हो सकती है?

चर्चा में क्यों?

- एक बार फिर भारत में आय और संपत्ति असमानता पर हाल ही में बहस ने गति पकड़ ली है, जिसे "भारत में आय और संपत्ति असमानता, 1922-2023: अरबपति राज का उदय" के प्रकाशन से बढ़ावा मिला है, यह रिपोर्ट रिकॉर्ड-उच्च आर्थिक असमानताओं को उजागर करती है।

भारत में आय और संपत्ति असमानता (1922-2023) रिपोर्ट

- वर्ल्ड इनइक्वैलिटी लैब की इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत की बढ़ती असमानता को अत्यधिक अमीर लोगों को लक्षित करके एक व्यापक और प्रगतिशील संपत्ति कर पैकेज के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है।
- अर्थशास्त्री नितिन कुमार भारती, लुकास चांसल, थॉमस पिकेटी और अनमोल सोमांची द्वारा लिखित अनुवर्ती रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के सबसे अमीर 1% लोगों की संपत्ति का हिस्सा इतिहास में अपने उच्चतम स्तर पर है।
- 10 करोड़ रुपये से अधिक शुद्ध संपत्ति पर वार्षिक संपत्ति कर और विरासत कर, वयस्क आबादी के शीर्ष 0.04% को लक्षित करता है, जिनके पास कुल संपत्ति का एक चौथाई से अधिक हिस्सा है।
- इस कर से पर्याप्त राजस्व प्राप्त होगा, जिसका प्रभाव केवल 0.04% आबादी पर पड़ेगा।
- साथ ही 10 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति पर 2% वार्षिक कर और 10 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति पर 33% उत्तराधिकार कर से सकल घरेलू उत्पाद का 2.73% राजस्व प्राप्त हो सकता है।
- अपितु इन उपायों के साथ-साथ गरीबों, निचली जातियों और मध्यम वर्गों की सहायता के लिए स्पष्ट पुनर्वितरण नीतियों का पालन किया जाना चाहिए।

असमानता का द्विमत

- कई लोग तर्क देते हैं कि असमानता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को नुकसान पहुंचाती है।
- हालांकि कुछ के अनुसार, असमानता वास्तव में फायदेमंद होती हैं, क्योंकि यह उद्यमियों को व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य करती है, जिससे दूसरों के लिए रोजगार और कल्याण बढ़ता है।

Result Mitra

- अपितु यह दृष्टिकोण गलत है, क्योंकि असमानता के हानिकारक आर्थिक प्रभाव भी हो सकते हैं।
- असमानता के एक रूप पर विचार करें, तो यह श्रम के सापेक्ष पूंजी के बीच एकाधिकार शक्ति का संकेन्द्रण है।
- इसका उपभोग, कल्याण और विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- हालांकि यदि सही तरीके से किया जाए, तो संपत्ति कर और वितरण के सकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं।

एकाधिकार शक्ति और उपभोग में संबंध

- अरबपति अपना पैसा एकाधिकार से प्राप्त करते हैं। उनके कॉर्पोरेट संगठन अपने-अपने बाजारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इससे उन्हें बाजार में उतार-चढ़ाव पर निर्भर रहने के बजाय अपनी कीमतें निर्धारित करने की अनुमति मिलती है।
- उत्पादन की लागत पर अधिकतम सीमा उनकी एकाधिकारवादी स्थिति से तय होती है।
- इस प्रकार, किसी भी दिए गए स्तर के मौद्रिक वेतन के लिए, वास्तविक वेतन - जो क्रय शक्ति निर्धारित करता है - मजबूत एकाधिकार वाली अर्थव्यवस्थाओं में कम है।
- इन एकाधिकार प्रभावों को वर्तमान में विकसित अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करने वाले जीवन-यापन के संकट के रूप में अनुभव किया जा रहा है।
- महामारी के कारण होने वाले कई मांग-और-आपूर्ति झटकों के बाद लाभ मार्जिन में सुधार करने के लिए निगमों द्वारा कीमतों को बढ़ाने या लालच की धारणा को पश्चिम की उच्च मुद्रास्फीति दरों के लिए दोषी ठहराया गया है।
- सैद्धांतिक अर्थशास्त्र के अनुसार, एकाधिकार के तहत उत्पादन का लाभ, प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था की तुलना में अधिकतम होता है, हालांकि यह सर्वकल्याण को हतोत्साहित करता है।
- इस प्रकार, एकाधिकार की उपस्थिति वास्तविक मजदूरी और उत्पादन और निवेश के निम्न स्तर को कम कर सकती है।

असमानता और विकास में संबंध

- इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझना आसान है, जैसे मान लीजिए कि कोई निगम एक नई सुविधा खोलने का इरादा रखता है। नए पूंजी स्टॉक के बनने से पहले, इसे बनाने के लिए श्रमिकों को वेतन दिया जाता है।
- श्रमिकों का पैसा उत्पादों की खरीद पर खर्च किया जाता है, जिससे माल विक्रेताओं की आय बढ़ती है, जो बदले में अपनी बढ़ी हुई आय को अतिरिक्त सामान खरीदने पर खर्च करते हैं।
- श्रमिकों और उत्पाद व्यापारियों के लिए राजस्व में पूरी वृद्धि प्रारंभिक निवेश से अधिक है। इस प्रक्रिया को 'गुणक' प्रभाव के रूप में जाना जाता है, जिसमें निवेश प्रारंभिक निवेश की तुलना में आय में अधिक अनुपात में वृद्धि करता है।
- हालांकि जब कोई निगम बाज़ार की शक्ति का प्रयोग करती हैं, तो कीमतें अधिक होंगी।
- श्रमिकों की वास्तविक मज़दूरी कम होती है, और वे केवल कम वस्तुएँ ही खरीद सकते हैं।
- अपितु, अधिक मार्जिन के कारण कंपनियाँ कम मात्रा में वस्तुओं की बिक्री से समान लाभ प्राप्त करेंगी।
- कम खपत शक्ति के कारण एकाधिकार के तहत निवेश की एक निश्चित राशि से आय में वृद्धि कम होगी।
- इस प्रकार, निवेश में एकाधिकार के तहत विकास पर कमज़ोर प्रभाव पड़ेगा जबकि लाभांश पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

Result Mitra

- अपितु एक तर्क यह भी है कि अमीरों का उपभोग विकास को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।
- जबकि अमीरों की खपत की पूर्ण मात्रा अधिक है, वे अपनी आय का कम हिस्सा उपभोग करते हैं। गुणक प्रक्रिया आय से उपभोग के अनुपात पर निर्भर करती है। एक असमान अर्थव्यवस्था उन लोगों के हाथों में कम आय डालेगी जिनके पास उपभोग करने की अधिक प्रवृत्ति है, जिससे अर्थव्यवस्था में कमज़ोर विस्तार होगा।

पुनर्वितरण और विकास

- यद्यपि आय का पुनर्वितरण तथा रोजगार सृजन को प्रभावित करने से असमानता तुलनात्मक रूप से अधिक हानिकारक साबित हो सकती है।
- क्योंकि उद्यमियों को उच्च कर व्यवस्था के तहत धन संचय करने के लिए कम प्रोत्साहन मिलेगा, जिसके परिणामस्वरूप निवेश और रोजगार अवसरों में कमी आएगी।

धन बनाम लाभ

- गौरतलब है कि धन और लाभ दोनों अलग-अलग अवधारणा है।
- निवेश भविष्य के लाभ की उम्मीदों के प्रभाव में होता है, जबकि धन पिछले लाभ से संचित होता है।
- पोलिश अर्थशास्त्री मिशल कालेकी के अनुसार 'धन पर कर निवेश को प्रभावित नहीं करेगा क्योंकि यह भविष्य के लाभ की उम्मीदों को अपरिवर्तित छोड़ देता है।
- उदाहरण के लिए, गौतम अडानी की संपत्ति पर कर लगाने से निवेश प्रभावित नहीं होगा क्योंकि हवाई अड्डों से अपेक्षित लाभ हवाई यात्रा की मांग पर निर्भर करता है जो उनकी संपत्ति के मूल्य से स्वतंत्र है।
- हालांकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि लाभ को धन में बदलने की जटिलता कुछ व्यवसाय-मालिकों को निवेश करने से रोक सकती है।
- साथ ही धन का पुनर्वितरण विकास को बढ़ावा देने के लिए सहायक हो सकता है।

आर्थिक विकास के बावजूद बढ़ती असमानता के कारण

- धन का संकेन्द्रण से पीढ़ियों तक असमानता स्थायी हो सकती है, क्योंकि धनी लोग अपने वंशजों को लाभ दे सकते हैं।
- तथा भ्रष्ट आचरण और पक्षपात के परिणामस्वरूप चुनिंदा समूह के बीच धन संचय हो सकता है, जिससे असमानता बढ़ती है।
- आर्थिक विकास से कुछ क्षेत्रों या आय समूहों को असमान रूप से लाभ हो सकता है, जिससे धन का असमान वितरण हो सकता है।
- अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा तंत्र और कल्याणकारी कार्यक्रमों के कारण कमजोर आबादी को पर्याप्त सहायता नहीं मिल पाती, जिससे धन का अंतर बढ़ जाता है।
- कुशल और अकुशल श्रमिकों के बीच वेतन अंतर आय असमानता में योगदान कर सकता है। कम वेतन और कम लाभ वाले अनौपचारिक श्रम बाजार आय के अंतर को बढ़ा सकते हैं।
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक असमान पहुंच ने ऊपर की ओर बढ़ने के अवसरों को सीमित कर दिया है, जिससे मौजूदा असमानताएं और मजबूत हुई हैं।
- स्वचालन और तकनीकी प्रगति के कारण कुछ समूहों में नौकरी का विस्थापन और वेतन में स्थिरता आती है, जिससे आय असमानता बढ़ती है।

निष्कर्ष

- यद्यपि किसी एक के लिए, जब धन का पुनर्वितरण किया जाता है और आय में वृद्धि होती है, और गुणक प्रक्रिया मजबूत हो जाएगी।

Result Mitra

- तब व्यवसाय उन जगहों पर निवेश करने के लिए अधिक इच्छुक होंगे जहां क्रय शक्ति मजबूत है।
- यदि एकाधिकार को कम किया जाता है, तो कीमतें कम होंगी और वास्तविक मजदूरी अधिक होगी, जिससे मांग में वृद्धि होगी।

Result Mitra